JSSC INTER LEVEL (LDC) / झारखंड सहायक आचार्य

आत्मपरिचय (कविता)

हरिवंश राय बच्चन

सरल भाषा में समझे

LIVE

BY PANKAJ SIR

आरोह खण्ड –2(काव्य खण्ड)

❋ आत्मपरिचय

❋ हरिवंश राय बच्चन का काव्य परिचय :–

जन्म – 27 नवंबर 1907 प्रयागराज (यूपी)

मृत्यु – 18 जनवरी 2003 मुम्बई

पिता – प्रताप नारायण श्रीवास्तव

माता –सरस्वती देवी

पुत्र – अजिताभ बच्चन व अमिताभ बच्चन

❖ हरिवंश राय बच्चन छायावाद युग के प्रमुख कवि व साहित्यकार रहे है।

❖ इनकी सबसे प्रसिद्ध कृति मधुशाला है जिसमें मधु, मदीरा, प्याला, साकी (शराल परोसने वाली) हाला(शराब) , मधुशाला और मदिरालय की मदद से जीवन की जटिलताओं के विश्लेषण का प्रयास किया गया है।

❖ प्रमुख रचनाएँ :– (1) काव्य –संग्रह)

मधुशाला (1935) , मधुबाला (1938), मधु कलश (1935), निशा निमंत्रण , एकांत गीत नए–पुराने झरोखे, टूटी –फूटी कड़िया आदि।

(2) आत्मकथा (4 खंड) – क्या भूलूँ क्या याद करूँ

– नीड़ का निर्माण फिर

– बसेरे से दूर

– दशद्वार से सोपान तक

(3) डायरी – प्रवासी की डायरी

❖ संपूर्ण रचना – बच्चन रचनावली (10 खंड)

(आत्म परिचय कविता)

मैं जग – जीवन का **भार** लिए फिरता हूँ,

फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;

कर दिया किसी ने प्रकृत जिनको छूकर

मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हुँ !

मैं स्नेह-सुरा का पान किया कस्ता हूँ,

में कभी न जग का ध्यान किया करता हुँ,

जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,

मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !

❖ **सारांश –** प्रस्तुत पद्यांश के इन पंक्तियों में कवि जग के प्रति अपने प्यार के दर्शाना चाहते है। जीवन मे बोझ रहते भी सभी को प्यार व समय देना चाहते है। कवि कहते है किसी ने हुकर उनके मन को झंकार से भर दिया है। उनके जीवन में दूसरो के प्रति प्रेम भर गया है। कवि का अपने जीवन में मात्र एक ही कार्य मानते है प्रेम के बाते कहना और सुनना।

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ

मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ

है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता

मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ

सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,

जग भव-सागर तरने की नाव बनाए,

मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

सारांश – उपरोक्त पंक्तियों में कवि अपने मन के उफानों व अपनी कल्पना को दर्शाना चाहता है तथा वह सुख दूख दोनो को जीवन में खुशी –खुशी स्वीकार कर मस्ती में जीवन व्यतीत करना चाहता है। बच्चन जी इस माया रूपी तुफान की लहरो में न ही अपने आप को फंसाना चाहते है।

(3) मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,

उन्मादाँ' में अवसाद लिए फिरता हुँ,

जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,

मैं , हाय, किसी की याद लिए फिरता हुँ !

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?

नादान वहीं हैं, हाथ, जहाँ पर दाना!

फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?

मैं सीख रहा हुँ, सीखा ज्ञान भुलाना !

सारांश – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अपने जीवन के यौवन काल की मस्ती व विरह की स्मृतियों का स्मरण किए है। जीवन की अनन्त जिज्ञासा के विपक्ष में अपनी विस्मृति जग की मूर्खता का दिखाते है। और एक नई विधि से अपने ज्ञान को भूल सकूँ तथा दूसरों को मूर्ख न बनाकर उनमें प्यार का संचार कर सकूँ।

(4) मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,

मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता,

जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,

मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,

शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,

हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,

मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

सारांश – उपरोक्त पंक्तियों में कवि अपने और संसार के संबंध में अन्तर स्पष्ट कर रहा है। यहाँ कवि महल व खंडहर के उदाहरण द्वारा मनुष्य की संतुष्टि के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। अर्थात कवि अपने संतुष्टि दया व प्रेम रूपी टुटे–फुटे मकान के अंश के लिए विशाल भवन अर्थात धन वैभव सभी को न्यौछावर कर देतें है।

(5) मैं रोया, इसको तुम कहाते हो गाना,

मैं फूट पडा, तुम कहते, छंद बनाना,

क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,

मैं दुनिया का हूँ एक क्या दीवान"

मैं बीवानों का वेश लिए फिरता हूँ

मैं मादकता निद्राशष लिए फिरता ही

जिसकी सुनकर ज़य शम, झुके; लहराए,

मैं मरती का संदेश लिए फिरता हुँ

सारांश – उपरोक्त पंक्तियों में बच्चन जी अपने आप को कवि न मानकर एक मुग्ध प्रेमी व मौज–मस्ती का संदेश फैलाने वाला संदेशवाहक मानते है जिससे सब मस्ती में झुमने व खुशी से लहराने लगते है।

कविता का भावार्थः– कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है।